# इकाई 7 पशुपालन एवं बागवानी*

संरचना


7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 भारत में पशुचारण वितरण

7.2.1 पश्चिमी भारत में बंजर जमीन पर पशुचारण

72.2 भारत के हिमालय क्षेत्र में पशुचारण

7.3 पशुचारणों के प्रकार

7.3.1 घूमंतू पशुचारण

7.3.2 मौसमी पशुचारण

7.4 पशुपारकों की प्रमुख समस्याएं

7.4.1 हिमालय क्षेत्र

7.4.1.1 पशुचारण पर सरकारी प्रतिक्रियाएं

7.4.1.2 भूमि के स्वामित्व के अधिकार से वंचित

7.4.1.3 आजीविका का संकट

7.4.1.4 आसीनता

7.4.2 पश्चिमी क्षेत्र

7.4.2.1 चरागाहों का घटते जाना

7.4.2.2 पशुचिकित्सा संबंधी जानकारियों की कमी

7.4.2.3 पशुओं तथा पशु–उत्पादों के व्यापार के लिए अन्य पक्षों पर निर्भरता

7.5 बागवानी के काम में लगे लोगों का परिचय

7.6 भारत के बागवानी कृषि कार्यों से जुड़े समाज

7.7 बागवानी कृषि के विभाग

7.7.1 मेवे की खेती

7.7.2 सब्जी उत्पादन

7.7.3 सजावटी उत्पादों की खेती

7.8 प्रौद्योगिकी आधारित बागवानी कृषि

7.8.1 पारंपरिक सरल बागवानी कृषि

7.8.2 अग्रवर्ती बागवानी कृषि

7.9 सारांश

7.10 संदर्भ

7.11 बोध प्रश्नों के उत्तर


* डॉ. ऐजाज अहमद गिलानी द्वारा लिखित।

## 7.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप पढेंगे –

- पश्चिमी भारत में तथा हिमालय क्षेत्र में पशुचारण तथा उससे जुड़ी समस्याओं का वर्णन;
- पशुचारण के दो रूपों की व्याख्या तथा घूमंतू पशुचारण ऋतुप्रवासीय पशुचारण की तुलना;
- भारत में बागवानी समाजों का अस्तित्व;
- बागवानी के प्रकार – मेवे की खेती, सब्जियों की खेती, सजावटी खेती; तथा
- प्रौद्योगिकी आधारित बागवानी का वर्णन।

## 7.1 प्रस्तावना

पशुचराने वालों के नृजातीय समूह या जाति समूह होते हैं जो पशुपालन का पारंपरिक व्यवसाय करते हैं। भारत में पशुचारणों की प्रथा 2000 वर्ष पुरानी है। उत्पादन तथा आर्थिक समृद्धि के लिए पशुओं को पालने के कार्य को पशुपालन कहा जाता है। बड़ी संख्या में पशुओं को पालना आर्थिक लाभ व उत्पादन में वृद्धि करता है। कृषि कार्य में सहयोगी होने के साथ–साथ पशुपालन एक ऐसा व्यवसाय है जो कृषि पर ही आधारित भी है परन्तु इसे निम्न स्तरीय व्यवसाय माना जाता है। इससे पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ा है। इसकी राष्ट्रीय आय में बड़ा योगदान है। यह पोषक आहार एवं रोजगार के अवसर भी प्रदान करता है। पशुपालन करने वालों के लिए पशुपालन उनकी आजीविका का साधन है। यह पर्यावरण में सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम है। आर्थिक अनुकूलन का यह एक तरीका है इससे पारिस्थितिकी संतुलन में सहयोग मिलता है। सूखी और बंजर जमीन जिसमें खेती नहीं की जा सकती, उसमें चरवाहे पशु चुराते है और उनसे दूध, ऊन, बाल आदि प्राप्त करते है। वे पशुओं की देखभाल करते हैं और उनके उत्पादों से अपना काम चलाते हैं। पशुओं के मांस और त्वचा से अंतिम रूप से जो बड़ी आमदनी हो सकती है, वे उसका लालच नहीं करते। पशुपालकों की अर्थव्यवस्था और उनका जीवन–यापन जैव–विविधता पर निर्भर करती है।

## 7.2 भारत में पशुचारण वितरण

भारत में पशुपालकों के अनेक समूह हैं जो अनेक प्रकार के पशुओं का पालन करते हैं। इनमें कुरूबा, धांगर कर्नाटक में पाये जाते हैं। आंध्र प्रदेश में कुरूमा, गोला आदि। राजस्थान में राइका व गुज्जर, गुजरात में भरवाड, हिमाचल क्षेत्र में गुज्जर, बकरवाल तथा गद्दी आदि पश्चिमी भारत की शुष्क भूमि तथा उत्तरी भारत में हिमालय की पहाड़ियां पशुपालन के लिए जानी जाती है। इन हिस्सों में घूमंतू चरवाहे रहते हैं, वे अनेक प्रकार के पशुओं का पालन करते हैं जैसे भेड़ें, बकरियां, भैंसें, ऊंट, याक आदि।

### 7.2.1 पश्चिमी भारत में बंजर जमीन पर पशुचारण

चरवाहे पश्चिमी भारत के चरवाहे भूमिहीन होते हैं। वे पशुओं का पालन करते हैं तथा पशुओं की खरीद व बिक्री का व्यापार करते हैं। ये चरवाहे अरावली की पहाड़ियों में पाये जाते हैं। पश्चिमी बंजर जमीन पर प्रति वर्ष पर्याप्त रूप से वर्षा होती है, इसलिए पशुपालन का व्यवसाय आर्थिक लाभ की चीज माना जाता है।

पश्चिमी भारत में चरवाहे अन्य पड़ोसी देशों से भी आ जाते हैं जैसे पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बलूचिस्तान। वे अपनी समन्वय संस्कृति अपने साथ लाते हैं। इस प्रकार इन चरागाहों में विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं का संगम हो जाता है। विभिन्न जातियों के लोग चरवाहों के रूप में परंपरागत रूप से जीवन यापन करते हैं और इन मैदानों में एक–दूसरे से मिलते हैं। ज्यादातर चरवाहे एक ही नस्ल के पशुओं का पालन करते हैं और उन्हें पालने में वे दिव्य आनंद का अनुभव करते हैं। विभिन्न प्रकार के चरवाहों में रायका समूह के चरवाहे ऊँटों का पालन करते हैं तथा चारण पशुओं का पालन करते हैं। पशु पालन उनका वंशानुग व्यवसाय है। अतः चरवाहे अपने पशुओं का विशेष ध्यान रखते है। कुछ पशुपालक समूह अपने पालतू पशुओं को मांस के व्यापार के लिए बेचना वर्जित मानते हैं। कुछ चरवाहे ऐसे हैं जो पशुओं को बेचना भी अच्छा नहीं मानते। पशुचारण व्यवसाय में अनेक जातियों के लोग आते हैं। परम्परागत रूप से पशुपालन करते–करते कुछ पशुपालक खेती के काम भी करने लोग भी खेती के साथ–साथ पशुपालन का काम करते हैं जैसे कि जूनागढ़ के अहीर। पशुपालन उनके लिये एक अतिरिक्त आय का साधन बन जाता है। खेती के साथ–साथ पशु–पालन करने वाले किसान पारम्परिक चरवाहों से अलग होते हैं और उन्हें गैर पारम्परिक पशु–पालक कहा जाता है।

### 7.2.2 भारत के हिमालय क्षेत्र में पशुचारण

हिमालय की पहाड़ियों में निवास करने वाले पशुपालक घुमन्तू प्रकार के होते हैं। वे निचली भूमि से उच्च भूमि की ओर ऋतुओं के अनुसार पशु चराने का लाभ उठाते हैं। हिमालय के क्षेत्र में बड़े–बड़े चरागाह मौजूद हैं जिनमें ये अपने पशुओं को चराते हैं (भसीन, 1988)।

गर्मियों में जब अल्पाइन क्षेत्र में बर्फ पिघल जाती है तब हिमालय क्षेत्र के चरवाहे ऊँची पहाड़ियों पर चले जाते हैं और वहां अपने पशुओं को चराते हैं। बरसात के दिनों में वे निचले क्षेत्रों में लौट आते हैं तथा शीत ऋतु में जहां कहीं भी उन्हें पशु चराने के लिये चरागाह मिल जाते हैं, वहीं ये अपने पशुओं को चराते हैं। चरवाहों के लिये निचली पहाड़ियों तथा ऊँची पहाड़ियों पर चराने का सिलसिला यूं ही चलता रहता है, जहां कहीं भी ये अपने पशुओं को चराते है उन्हीं क्षेत्रों में अस्थायी रूप से बस जाते हैं। प्रवासी चरवाहों में कश्मीर के गुर्जर, उत्तरप्रदेश तथा हिमाचल प्रदेश के चरवाहे भैंसे चराते हैं। जम्मू और कश्मीर के बकरवाल भेड़–बकरियां चराते हैं। उत्तर प्रदेश के भोटिया जाति के चरवाहें भेंड़ें चराते हैं। हिमाचल प्रदेश के गद्दी तथा कोली जाती के शेरपा याक का पालन करते हैं। गर्मी के दिनों में ये सभी चरवाहे हिमालय की ऊँची भूमि पर चले जाते हैं और सर्दियों में हिमालय के निचले हिस्सों में लौट आते हैं। हिमालय क्षेत्र में रहने वाले कुछ चरवाहे पशुपालन के साथ–साथ खेती का काम भी करते हैं। खेती करने वाले पशुपालकों के लिए पशुपालन आय का अतिरिक्त साधन है। वे इसके साथ–साथ व्यापार, हस्तशिल्प करीदाकारी आदि काम भी करते हैं।

पश्चिमी भारत तथा हिमालय की पहाड़ियां, भारत में पशु चारण के दो महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। इन क्षेत्रों में रहने वाले लोग विभिन्न प्रकार के पशुओं का पालन करते हैं। इनका वर्णन नीचे किया जा रहा है।

**गतिविधि 1**

अपने शहर गाँव की सार्वजनिक पुस्तकालय या प्राकृतिक ऐतिहासिक संग्रहालय में जाइये वहां चरवाहों के जीवन पर आधारित कोई पुस्तक पढ़िये इनमें आपको बन–गुजरों गद्दी तथा बकरवाल आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होगी। उनके जीवन स्तर तथा जीवन की संभावनाओं पर एक निबंध लिखिये। अपने अध्ययन केंद्र में जाकर अपने साथियों के साथ इस पर चर्चा कीजिये।

## 7.3 पशुचारणों के प्रकार

पशुपालकों की श्रेणी में अनेक पशु पालक समूह आते हैं। इनमें से घुमन्तू पशुपालक तथा अस्थाई रूप से निवास करने वाले पशुपालक प्रमुख रूप से चर्चा में रहते हैं।

### 7.3.1 घुमन्तू पशुचारण

घुमन्तू पशुचारक प्रवासी समुदायों के लोग होते हैं जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर पशुओं को चराते हुए आगे बढ़ते रहते हैं और पशु चराने के लिये उपयुक्त अवसर पाकर कुछ दिन के लिये वहीं निवास भी करते हैं। ये चरवाहे घूम–घूम कर पशु चराते हैं, क्योंकि इस प्रकार पशुओं का पालन करने से उनकी आर्थिक आवश्यकतायें पूरी होती रहती हैं। यद्यपि इनके एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में तथा पशुओं के झुंडों में अनियमिततायें हो सकती हैं परन्तु वे पर्वू निर्धारित रास्तों से ही गुजरते हैं और अस्थाई रूप से निवास करने के लिये उनकी प्रवास स्थलियां प्रायः जानी पहचानी होती हैं।

पूर्व निर्धारित स्थलों पर पशुओं को चराना तथा चराते–चराते अस्थाई रूप से ठहरने के लिये पूर्व निर्धारित स्थलों को ही चुनना उनके अतीत के अनुभवों के आधार पर होता है जिनमें गोचर भूमि की उपलब्धि तथा बाजारों की उपलब्धि, बरसात तथा सीमायें आदि आवश्यकता होती हैं। मौसम में अचानक परिवर्तन आने पर जैसे अचानक भारी बरसात का होना इन चरवाहों को पशुओं को चराने के स्थलों को पशुओं को चराने के स्थलों को बदलने पर विवश करते हैं। हिमाचल प्रदेश के गुज्जर, गढ़वाल तथा उत्तराचंल के गुज्जर तथा लद्दाख के चेंगपा अपने परिवारों को भी अपने साथ रखते हैं, और उनके परिवार भी उन्हीं की तरह एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं। क्योंकि वे खेती का काम नहीं करते। अतः अपनी आवश्यकताओं के लिये उन्हें अनेक प्रकार की वस्तुएं उन लोगों से खरीदनी पड़ती हैं जो खेती का काम करते हैं अथवा अन्य व्यवसायों से संबंधित हैं। चरवाहे इनसे प्रायः वस्तुओं का आदान–प्रदान करते हैं।

कुछ चरवाहे ऐसे होते हैं जो पशुपालन के साथ–साथ खेती का भी काम करते हैं। इनमें उत्तरी पश्चिमी हिमालय क्षेत्रों में रहने वाले भोटिया तथा गद्दी होते हैं और सिक्किम तथा अरूणाचल प्रदेश में रहने वाले भोटिया और मोनपा होते हैं। ये लोग कुछ समय के लिये अपने पशुओं को लेकर चरागाहों में चराने के लिये निकल जाते हैं और जब इन्हें खेती का काम करना होता है तब ये अपने पशुओं को साथ लेकर नीचे

उतर आते हैं। पशुपालन और कृषि दोनों कामों की ऋतुओं के अनुसार साथ–साथ किया जाता है। घुमन्तू चरवाहे पशुपालन के साथ–साथ शिकार करने का काम भी करते हैं टोकरियां बनाते हैं तथा अन्य व्यवसायों में भी हाथ डालते हैं और लोग पशुपालन का काम नहीं करते उनके साथ सांकेतिक संबंध स्थापित करते हैं।

### 7.3.2 मौसमी पशुचारण

दुनिया के अनेक देशों यूरोप अफ्रीका, एशिया तथा दक्षिण अमेरिका के विभिन्न देशों में इस प्रकार का पशुपालन किया जाता है। ये चरवाहे अपने पशुओं को ऋतुओं के आधार पर चराने के लिये ले जाते हैं। पशुओं को चराने के लिये ये पुरूषों को नौकरी पर रखते हैं जो अकेले अथवा अपने परिवारों के साथ पशु चराने के लिये निकल जाते हैं। कभी–कभी उनके साथ पशुओं के स्वामी भी होते हैं। कभी–कभी ये लम्बी यात्रा पर निकल जाते हैं कभी–कभी ये कुछ दिनों के लिये ही निकलते हैं। इस प्रकार के पशु पालक बहुत ऊंचाइयों पर नहीं जाते वे जमीन पर स्थाई रूप से मौजूद चरागाहों में ही अपने पशुओं को चराते हैं। जब वे अपने पशुओं के साथ आगे बढ़ रहे होते हैं तो उनके रास्ते पहले से ही तय होते हैं। गर्मियों में ये कुछ ऊंचाइयों पर चले जाते हैं ओर सर्दियों में ये निचली जमीन पर आ जाते हैं।

मौसमी पशुचरवाहे गर्मी के मौसम में विभिन्न स्थलों पर खेती करते हैं, यद्यपि उनका खेतों में फसल उगाने का कार्य बहुत सीमित होता है, मुख्य कार्य तो पशुचारण ही है। वे जानवरों के बदले जरूरत की चीजें अनाज व दालें प्राप्त कर लेते हैं। मौसमी पशु चारण दो प्रकार का होता है – ऊँची चढ़ाई वाला पशुचारण तथा क्षितिजीय पशुचारण। ऊँचाइयों पर पशुचारण पहाड़ी क्षेत्रों में होता है। इस दौरान ऊँचाइयों पशु चारण करते हुए ढलानों की ओर आते हैं। गर्मी में ऊँचाइयों पर पशु चराते हैं तथा सर्दियों में नीचे के हिस्सों में पशु चराते हैं। हिमालय की पहाड़ियों पर चरवाहे पशुओं को अपने साथ चरागाहों में ले जाते हैं। ऊँचाई पर मौसमी पशुचारण हिमालय की पहाड़ियों उनके निचले हिस्सों और घाटियों में होता है। नीति घाटी, नन्दा देवी, पश्चिम घाट तथा मध्यवर्तीय क्षेत्र अनुलम्ब पशुचारण होता है। क्षैतिज मौसमी पशुचारण ग्रीष्मकालीन चरागाहों में निवास स्थलों से दूर होता है तथा सर्दियों में शरद ऋतु के लिए निर्धारित चरागाहों में निवास स्थलों के निकट होता है। विपरीत जलवायु तथा सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों की स्थिति में पशुचारण की प्रक्रिया बाधित हो सकती है।

मौसमी पशुचारण ऊँचाइयों पर स्थित चरागाहों में लाभकारी होता है, चरवाहे खेती का काम करते हो या नहीं करते हों। जब वे एक चरवाह से दूसरे चारवाहों में अपने पशुओं के साथ जाते हैं तब वे दोनों तरह के मौसमों के लिए उपयुक्त इन्तजाम रखते हैं। हर चरवाहा और पशुओं के झुंडों के निकट ही निवास करने की योजना बनाता है। वे अपने झुंडों में पशुओं की संख्या बढ़ाते रहते हैं जिससे उन्हें आर्थिक लाभ होता रहता है।

## 7.4 पशुचारकों की प्रमुख समस्याएं

चरवाहों के पास संसाधनों की कमी रहती है। इसके अलावा अन्य अनेक समस्याओं से उन्हें जूझना पड़ता है जिनमें राजनैतिक व सामाजिक समस्याएं भी शामिल है। ये ऐसी समस्याएं हैं जिनसे सभी प्रकार के पशुचारक ग्रस्त हैं, अतः इनकी अलग–अलग व्याख्या की आवश्यकता नहीं है। फिर भी समस्याओं को अच्छी तरह समझने के लिए

हम उन्हें अलग–अलग समझने का प्रयास करेंगे। विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में रहने वाले पशुचारकों, हिमालय क्षेत्र तथा पश्चिमी भारत में रहने वाले पशुपालनकों की समस्याएं इस प्रकार है :–

### 7.4.1 हिमालय क्षेत्र

हिमालय क्षेत्र के पशुपालकों को सरकारी नौकरियों में आरक्षण का लाभ भी मिलता है। अन्य क्षेत्रों में भी वे आरक्षण का लाभ उठाते हैं। परम्परागत जीवन–शैली से जुड़ी भी अनेक समस्याएं हैं। सबसे बड़ी समस्याएं सरकार की पशुपालकों से संबंधित नीतियों से जुड़ी हैं। बढ़ती जनसंख्या का दबाव और चरागाह क्षेत्रों का कम होते जाना एक गंभीर समस्या है।

#### 7.4.1.1 पशुपालन संबंधी सरकारी प्रतिक्रियाएं

स्थायी रूप से निवास करने वालों की तुलना में पशुपालकों की जीवन–पद्धतियों को पिछड़ा हुआ तथा असभ्य माना जाता है। (सबरवाल, 1999) यह अन्तर ऐतिहासिक कालों में तैयार किए गये दस्तावेजों में दर्ज हैं क्योंकि पशुपालक न जनसंख्या नियंत्रण की नीतियों को मानते थे, न कर देते थे। सांस्कृतिक रूढ़िबद्धता के कारण पशुपालक अपने मौलिक अधिकारों से भी वंचित रहे। हिमालय क्षेत्र के पशुपालक पर्यावरण के लिए खतरा माने जाने लगे हैं क्योंकि वे पशुओं की संख्या में लगातार वृद्धि करते रहते हैं और उनके पशु उन वनस्पतियों को भी चर जाते हैं जिनका संरक्षण जरूरी है। इन कारणों से कुछ क्षेत्रों से पशुचारकों को हटाया भी जा चुका है।

#### 7.4.1.2 भूमि के स्वामित्व के अधिकार से वंचित

पशुचारक चरागाहों को अपनी सम्पत्तिर मानते हैं, क्योंकि परंपरागत रूप से वे सदा से ही इन चरागाहों में अपने मवेशियों को चराते आये हैं। (चक्रवर्ती, 1998) चरागाहों के वितरण के बारे में उनकी परम्पराएं तथा अन्य मान्यताएं उन्हें चरागाहों की व्यवस्था करते तथा संसाधनों बंटवारा या वितरण करने में मदद करते हैं। इसलिए वे चरागाहों पर अपना पारम्परिक अधिकार मानते हैं। परन्तु इस विरासत का कोई लेखा–जोखा उपलब्ध नहीं है। इसलिए सरकारी कागजों में इनका उल्लेख नहीं है। इसलिए भूमि–संसाधनों पर उनके अधिकार सुनिश्चित नहीं किया जा पाते। हिमाचल प्रदेश में भूमिहीनों को जमीन दिये जाने की योजना का लाभ भी इन पशुचारकों को इसी कारण नहीं मिल पाया।

#### 7.4.1.3 आजीविका का संकट

पशुचारकों को दो तरह से आजीविका के संकट का सामना करना पड़ता है। एक है चरागाहों का कम होते जाना/चरागाहों पर चरवाहों का वैधानिक अधिकार न होने से तथा उनके संरक्षण की नीतियां स्पष्ट न होने के कारण चरागाह दिन प्रतिदिन घटते ही जा रहे हैं।

जनसंख्या का बढ़ता – चरवाहों की संख्या में वृद्धि हो जाने से हिमालय की तलहटी में सर्दी के मौसम में होने वाले पशुचारण में कठिनाइयां उत्पन्न हो रही हैं। चरागाहों में कमी आने का एक कारण है इन क्षेत्रों में सड़कों का बनना तथा खेती के लिये जमीन तैयार किया जाना, जंगलों का कटना तथा सुरक्षा बलों के लिये जमीनों का

आबंटन। गर्मी के दिनों में हिमालय की ऊँचाइयों पर स्थित चरागाहों से संबंधित समस्यायें भी उत्पन्न होने लगी हैं। हिमालय – क्षेत्र में लद्दाख चेंगथंग सिक्किम में लेचंग, अरूणाचल प्रदेश में तवांग पशुचारकों के लिए संकट उत्पन्न करने लगे हैं। प्रवासी मार्गों तक अवरूद्ध हो जाना भी चरवाहों के लिए बहुत बड़ा संकट उत्पन्न कर रहा है। हिमालय क्षेत्र के राज्यों में पर्यटन में भारी कमी आई है। विद्युत उत्पादन केंद्रों का निर्माण तथा अनेक विकासपरक निर्माण भी समस्याएं खड़ी कर रहे हैं। परिणामतः चरवाहों को अपने पशुओं के साथ ग्रीष्मकाल से शरद ऋतु तक तथा शरद ऋतु से पुनः ग्रीष्मकाल तक पशु चराने के मार्ग बदलने पड़ते हैं नये रास्तों से मवेशियों के ले आये जाते के कारण अनेक मवेशी गायब हो जाते हैं, अनेक दुर्घटनाओं के शिकार हो जाते हैं। पशुओं की चोरी भी हो जाती है।

### 7.4.1.4 आसीनता

पशुपालकों के असुरक्षित प्रवासन के कारण हिमालय प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश में अनेक पशुपालक समूह घर बनाकर किसी एक स्थान पर बस गये हैं। हिमालय क्षेत्र के इन इलाकों पशुपालकों का पशु चराने के लिए निकलता खतरों से भरा है। इसके अलावा कुछ सरकारी नीतियां भी पशुपालकों के अनुकूल नहीं हैं। इन नीतियां के चलते पशुपालन में कठिनाइयां सामने आ रहीं हैं। चरवाहों की संस्कृति को भी बहुत खतरा है और पशुचारण व पशुपालन के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है। पशुपालकों के लिए जमीनों पर मालिकाना हक दिये जाने के वैधानिक आधार उपलब्ध न होने से उन्हें पशु चराने के लिए अपनी जगह मिलना भी संभव नहीं है और सार्वजनिक क्षेत्र लगातार सिकुड़ते जा रहे हैं।

कृषि एवं पशुपालन अर्थव्यवस्था के आधार के रूप में टिक नहीं पा रहा है और उसके स्थान पर खेती या बागवानी आर्थिक आधार बनते जा रहे हैं। इसका एक बहुत बड़ा कारण है शीतकालीन चरागाहों का प्रतिबंधित किया जाना। ऐसे में हिमालय क्षेत्र के पशुपालकों को कृषिकारी में लगना या बागवानी करना ही आर्थिक विकल्प दिखता है। ऐसा करके वे अपने मवेशियों को बचा सकते है तथा आगामी पीढ़ियों के लिए व्यावसायिक जमीन तैयार कर सकते हैं।

## 7.4.2 पश्चिमी क्षेत्र

हिमालय क्षेत्र के पशुपालकों की तरह ही पश्चिमी क्षेत्र के पशुपालक भी अनेक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इनका विवरण इस प्रकार है –

### 7.4.2.1 चरागाहों का घटते जाना

पश्चिमी भारत के क्षेत्रों में भी पशु चराने के स्थल कम होते जा रहे हैं। चरागाहों के कम होने के पीछे अनेक कारण हैं। जंगलों पर बढ़ते दबाव, सिंचाई आधारित खेती का विस्तार, ग्रामीण संस्थानों का पृथक्करण तथा चरागाहों का कम होते जाना। जंगलों के चारों ओर अब आबादी का दवाब बढ़ गया है जैसे अरावली की पहाड़ियों भेड़ों, ऊँटों तथा अन्य पशुओं के चराये जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। कृषि योग्य भूमि में सिंचाई की सुविधायें बढ़ जाने के कारण खेती का काम उन जमीनों पर भी होने लगा है जहां पहले पशु चराये जाते थे। राजस्थान में पशुओं को चराये जाते थे। राजस्थान में पशुओं को चराये जाने वाली बंजर जमीन पर भी अब सिंचाई सुविधाओं के कारण खेती होने लगी है और हर खेत में कई–कई फसलें ली जाती हैं, इससे पशु चराने

की जमीन बहुत कम हो गई। ग्रामीण संस्थानों में ग्रामीण संस्थानों जैसे, ग्राम पंचायतों को अब ये अधिकार दे दिये गये हैं कि वे मुक्त जमीन को सब के लिये खोल दें। इससे पशु चराने के लिये छोड़ी गई जमीनों पर अब ग्रामीणों ने कब्जे कर लिये हैं। जैसलमेर, बाड़मेर तथा बीकानेर और बानी के चरागाह राजस्थान में लगभग लुप्त हो चुके हैं।

### 7.4.2.2 पशुचिकित्सा संबंधी जानकारियों की कमी

आधुनिक युग में यद्यपि पशुचिकित्सकों और दवाईयों का अभाव नहीं है, बीते समय में पशुओं के बीमार हो जाने से प्रायः उनकी मृत्यु हो जाती थी परन्तु पशु पालकों में पशुओं की चिकित्सा के प्रति जागरूकता का अभाव पशुओं की चिकित्सा में बाधक बन जाता है। पशुपालक अपने पशुओं को टीके नहीं लगवाते। इसके स्थान पर वे पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों का इस्तेमाल करते हैं। पशुपालक आधुनिक दवाओं का इस्तेमाल भी पशुओं के इलाज के लिए करते हैं परन्तु क्योंकि वे पशु चिकित्सकों से सलाह लिये बिना स्वयं ही दवाओं की दुकानों से दवाएं खरीदकर बीमार पशुओं को खिला देते हैं। कितनी दवा दी जानी चाहिए इसकी ठीक जानकारी न होने के कारण वे पशु को जल्दी ठीक करने के जुनून में दवाओं की ज्यादा मात्रा खिला देते हैं। इसके अलावा बाजार में आजकल नकली दवाएं भी मिलने लगी है। पशुपालक नकली–असली का अंतर नहीं जानते और गलत दवायें खरीद कर खिला देते हैं जिससे समस्या और बढ जाती है।

### 7.4.2.3 पशु और पशु उत्पादों के व्यापार के लिए अन्य पक्षों पर निर्भरता

पशुपालन जानवरों का व्यापार सीधे–सीधे स्वयं नहीं कर पाते। पशुओं को बेचने के लिए तथा पशुओं के उत्पादों केा बेचने के लिए उन्हें किसी का सहारा लेना पड़ता है। इससे उनके मुनाफे में कटौती हो जाती है। जिन लोगों का पशुपालक सहयोग लेते हैं, वे प्रायः पशुपालक समाज के लोग नहीं होते। ऐसी स्थिति में उन्हें पशुओं के व्यापार में तथा पशुओं के उत्पादों के व्यापार में समुचित लाभ नहीं मिल पाता और पशुपालक स्वयं को उपेक्षित मानने लगते हैं।

**बोध प्रश्न 1**

1) पशुपालन की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) पशु चराने के लिए भारत में इस्तेमाल होने वाले दो प्रमुख क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) घूमंतु पशुचारक कौन हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4) आजीविका का संकट पश्चिमी क्षेत्र के पशुचालकों की सबसे बड़ी समस्या है? सत्य (✓) /असत्य (✗)

## 7.5 बागवानी के काम में लगे लोगों का परिचय

बागवानी खेती का एक प्रकार है जिनमें लोग वनस्पतियों व वृक्षों की खेती करते हैं जो सजावट, भोजन, दवाएं आदि के लिए उपयोग में लाए जाते हैं। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें बाग लगाए जाते हैं, इसीलिए इसे बागवानी कहा जाता है। बागवानी का व्यवसाय 18वीं शताब्दी में आरंभ हुआ था यद्यपि बाग लगाने की प्रथा बहुत पुरानी है। पशुपालकों से भिन्न, वे समाज जो पशुओं को पालते हैं, वे पेड़–पौधों के रोपड़ में विश्वास रखते हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आय हो सके और वे अपना जीवन यापन सुविधापूर्वक कर सकें।

बागवानी समाजों के लोग कृषि–समाजों से अलग होते हैं। वे खेती में हल नहीं चलाते। वे बागवानी के लिए बड़ी–बड़ी मशीनों तथा जटिल उपकरणों की जरूरत नहीं पड़ती। खेती करने वाले किसान पौधे उगाते हैं जो अनाज तथा दालों के रूप में उनके भोजन के संसाधन बनते हैं। कुछ लोग मुर्गीपालन का व्यवसाय करते हैं जिससे उन्हें आर्थिक लाभ हो सके। वे अपने द्वारा पैदा किये गये अनाजों को बेचकर वे चीजें खरीद लेते हैं जिन्हें खेतों में पैदा नहीं कर सकते। इसी प्रकार बागवानी के उत्पादों के बाजार में बेचकर अपनी आवश्यकता की चीजें खरीदी जाती हैं। बागवानी करने वाले समुदाय कभी–कभी शिकार भी करते हैं। वे मौसमी पेड़–पौधे उगाकर अपनी पौष्टिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। बागवानी के व्यवसाय में लगे लोगों के सामने व्यापार की व्यापक संभावनाएं खुली होती हैं। उनके समुदाय पशुपालकों के समुदायों की तुलना में बड़े होते हैं।

## 7.6 भारत के बागवानी कृषि कार्यों से जुड़े समाज

भारत में शिकार करने और भोजन इकट्ठा करने वाले समाजों के बाद बागवानी कृषि समाजों का उदय हुआ। अतीतकाल में बागवानी कृषि से जुड़े लोग तीन प्रकार के उत्पादन किया करते थे – फल और सब्जियां उगाना तथा सजाने वाले उत्पादों जैसे फूलों की खेती करना। भारत में विलियम केरी ने 19वीं शताब्दी में बागवानी कृषि की स्थापना की थी, परन्तु अंग्रेजों के भारत में आने से पहले मुगल शासक बागवानी कृषि

करवाते थे। विलियम केरी ने भारत में बागवानी कृषि को बढ़ावा दिया जिससे बाजार में बागवानी कृषि के विभिन्न प्रकार के उत्पाद शामिल किये जा सकें। भारत में बागवानी कृषि के चलन से पहले बाजारों में बागवानी कृषि के उत्पादों की कमी थी, तथा इनके व्युत्पन्न बाजारों में ही मुश्किल से मिलते थे। बागवानी कृषि का आरंभ होने के बाद यह उत्पाद बाजारों में आसानी से मिलने लगे।

धीरे–धीरे भारत में बागवानी कृषि का व्यवसाय बहुत बढ़ गया और इसके उत्पादों से होने वाली आमदनी के कारण राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने लगी। इसका अर्थ यह नहीं है कि भारत में बागवानी कृषि का व्यवसाय बहुत विकसित स्थिति में आ गया था। बागवानी कृषि एक ऐसा व्यवसाय है जिसकी विविधताओं और क्षमताओं में वृद्धि की अनन्त संभावनाएं हैं। बागवानी कृषि के उत्पाद फल, सब्जियां, मशरूम आदि मौसमी रूप से उपलब्ध होते हैं। इनके बाजार भाव बढ़ने की खुली संभावनाएं होती है। बागवानी कृषि के उत्पादों के उपभोक्ता अधिकतर शहरों के लोग होते हैं जो गांवों में रहने वाले कृषि उत्पादों से जुड़े लोगों की तुलना में फलों तथा सब्जियों की अधिक खरीदारी करते हैं। बागवानी कृषि की जड़ें खेती में होती हैं और ऐसे पौधों के उगाने से आरंभ होती हैं जिनके उत्पाद खाने के काम आते हैं। यद्यपि बागवानी कृषि में लगे लोग ऐसे पौधे ही उगाते हैं जिनके उत्पाद कलात्मक कार्यों, सजावट अथवा दवाओं के रूप में इस्तेमाल किये जाते हैं।

**गतिविधि 2**

इंटरनेट पर पिछले 10 वर्षों के दौरान भारत सरकार द्वारा बागवानी कृषि को बढ़ावा देने वाली जानकारियों व योजनाओं का पता लगाइए तथा विभिन्न प्रकार के पौधों/सब्जियों/शहद आदि के उत्पादन हेतु सरकार द्वारा जारी की गई धन राशियों का बागवानी कृषि में लगे लोगों से किस प्रकार उपयोग किया, इसकी जानकारी प्राप्त कीजिए। इस खोजबीन के बाद एक पृष्ठ का एक आलेख तैयार करिए। इस आलेख पर अपने अध्ययन केंद्र पर जाकर अपने साथियों के साथ चर्चा कीजिए।

## 7.7 बागवानी–कृषि के विभाग

बागवानी कृषि के व्यवसाय में कार्यरत लोग विभिन्न प्रकार के कार्यों को अपने हाथ में लेते हैं। परन्तु जो अपने उपभोक्ताओं की संतुष्टि को केंद्र में रखकर बागवानी कृषि करते हैं वे विभिन्न प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल करते हैं तथा उत्पादन की वैज्ञानिक विधियां अपनाते हैं। बागवानी कृषि के उत्पादों को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1) मेवे की खेती,

2) सब्जी उत्पादन,

3) सजावटी उत्पाद

यह विभाजन बागवानी कृषि के फसलों पर आधारित है तथा यह बागवानी कृषि के उत्पादों के इस्तेमाल पर भी आधारित है। सच तो यह है कि बागवानी कृषि के उत्पादों को अलग–अलग श्रेणियों में विभाजित नहीं किया जा सकता।

### 7.7.1 मेवे की खेती

मेवे की खेती में फलों तथा फलियों की फसलें उगाना तथा उनका व्यापार करना शामिल है। बागवानी कृषि में फलों में पेड़ों पर उगने वाले फल तथा झाड़ियों तथा बेलों पर आने वाले फल शामिल है। पेड़ों पर आने वाले फल प्रायः आकार में बड़े होते हैं परन्तु झाड़ियों पर आने वाले फल छोटे आकार के होते हैं। दोनों प्रकार के फल सदाबहार पौधों से प्राप्त किये जाते हैं परन्तु बागवानी कृषि में पारंगत लोग फलों को दो हिस्सों में विभाजित करते हैं सच्चे फल और मिथ्या फल। सच्चे फलों को सरल फल भी कहा जाता है। ये वे फल होते है जो एक अंडाशय वाले ऊतकों से बनते हैं। सच्चे फलों के उदाहरण हैं – आड़ू, संतरे, बेर आदि। मिथ्या फलों में – रसभरी, सेब और नाशपाती आदि आते हैं। मिथ्या फल ऊतकों और अंडाशय से बनते हैं।

### 7.7.2 सब्जी उत्पादन

सब्जी उत्पादन में इस्तेमाल होने वाली सब्जियां शामिल होती हैं। इस व्यवसाय में टमाटर, फलियां, मकई आदि उगाये जाते हैं जिनका व्यापार होता है। सब्जी उत्पादन में प्रायः दो तरह के उत्पाद शामिल होते हैं दोनों ही शाकीय श्रणी में आते हैं। फिर भी दोनों में उपयोगिता के आधार पर अंतर होता है। पहली श्रेणी में वे फसलें आती हैं जिन्हें पकाने से पहले नहीं खाया जा सकता है और दूसरी श्रेणी में वे सब्जियां आती है जिन्हें बिनाय पकाये भी खाया जा सकता है (जैसे – सलाद में उपयोग की जाने वाली सब्जियां) छोटे स्तर पर उगाये जाने वाली सब्जियां व्यावसायिक स्तर पर पर उपयोगी नहीं होती। व्यापार करने के लिए सब्जियों को बड़े–बड़े खेतों/भूखंडों में उगाया जाता है।

### 7.7.3 सजावटी उत्पादों की खेती

बागवानी कृषि में ऐस उत्पाद भी उगाये जाते हैं जो कलात्मक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल होते हैं। इस तरह की बागवानी कृषि में हरे पौधे उगाये जाते हैं, इसीलिए इसे हरित उद्योग भी कहा जाता है। सजावटी की श्रेणी में आने वाला पौधा अपने सौंदर्य दर्शन के गुणों के कारण सौंदर्यकरण के लिए इस्तेमाल किया जाता है यद्यपि हर पौधे में सौंदर्यकरण का गुण होता है परन्तु सभी को सौंदर्यकरण के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाता। जैसे सेब अथवा आम के पेड़ों को सजावटी उपयोग में नहीं लाया जाता। उनके सौंदर्यकरण की विशेषता को अन्य रूप में इस्तेमाल किया जाता है। सजावटी बागवानी कृषि के दो रूप होते हैं – एक है फूलों की खेती – इसमें गमलों में लगाए जाने वाले पौधे तथा फूल शामिल होते हैं। दूसरा है जमीन में उगाए जाने वाले बागवानी कृषि के उत्पाद। ये घर के बाहरी क्षेत्रों में सजावट के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। उदाहरण के लिए परिदृश्यीय सजावटी वनस्पतियों में ओक के पेड़, मधुचूस, चिनार का पेड़ आदि।

## 7.8 प्रौद्योगिकी आधारित बागवानी कृषि

बागवानी कृषि के व्यवसाय में लगे लोग अनेक उपकरणों का इस्तेमाल करते हैं। उपकरणों के इस्तेमाल के आधार पर बागवानी कृषि को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है – सरल बागवानी कृषि तथा विकसित या अग्रवर्ती बागवानी कृषि।

### 7.8.1 पारंपरिक सरल बागवानी कृषि

सरल बागवानी कृषि विभिन्न परम्परागत प्रौद्योगिक ढंगों से की जाती है जिन्हें यांत्रिक, जैविक, रासायनिक तथा प्रबंधन कहा जा सकता है। इनमें यांत्रिक विधि से जाने वाली बागवानी कृषि का पारंपरिक ढंग की बागवानी कृषि में विशेष महत्व है। सरल बागवानी कृषि से जुड़े लोग उन उपकरणों का इस्तेमाल भी करते हैं जो पुरा–पाषण युग के दौरान इस्तेमाल किये जाते थे – जैसे पत्थरों की बनी कुल्हाड़ियां जिनका इस्तेमाल जंगलों से लकड़ियां काटने के लिए किया जाता था। फावड़े तथा नुकीली छड़ियां जिन्हें मक्का, गन्ना तथा अन्य बागवानी कृषि से जुड़ी फसलों को बौने के लिए मिट्टी खोदने हेतु किया जाता था। धीरे–धीरे जब उन्होंने पशुपालन अपना लिया तब बागवानी कृषि में हल जोतने का चलन शुरू हो गया। यहीं से कृषि का विस्तार होना शुरू हो गया और कम लागत की खेती होने लगी। इसी दौरान भूमि के मालिकों ने खेती में काम करने के लिए लोगों की जरूरत महसूस की और जमीनदार तथा श्रमिक वर्ग बनते गये। बागवानी कृषि में काम आने वाले जितने भी यंत्र या उपकरण हें, उनमें हल का आविष्कार सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। हल के आविष्कार ने सामाजिक जीवन क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिए। यांत्रिक माध्यमों में आये नये बदलावों ने पहले से ही मौजूद बागवानी कृषि प्रौद्योगिकी को नई धार दे दी। समय के साथ–साथ बागवानी कृषि में लगे लोग नये–नये उपकरणों का प्रयोग करते रहे और पीढ़ी दर पीढ़ी विकास मूलक परिवर्तन होते रहे और बागवानी कृषि प्रौद्योगिकी में सुधार होता गया और उसका परिणाम है विकसित या अग्रवर्ती बागवानी कृषि।

### 7.8.2 अग्रवर्ती बागवानी कृषि

अग्रवर्ती बागवानी कृषि में कृषि उत्पादों के लिए जटिल माध्यमों का इस्तेमाल किया जाता है और अनेक प्रकार की फसलें उगाइ जाती हैं। फसलों के उत्पादन की जटिलता में बीजों का उत्पादन, कीट नियंत्रण, अच्छी गुणवत्ता वाले उर्वरक जमीन तैयार करने के आधुनिक तरीके ट्रैक्टरों का इस्तेमाल आदि शामिल हैं। ये आधुनिक प्रौद्योगिक नवीकरण बागवानी कृषि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इनका प्रयोग करने से धन, समय और ऊर्जा की बचत होती है। यांत्रिक ऊर्जा के इस्तेमाल से फसलों के लिये जल्दी और सरल ढंग से जमीन तैयार की जा सकती है। विकसित यंत्रों की जानकारी, उनके इस्तेमाल बागवानी कृषि के उत्पादों का रखरखाव, बाजारों की उपलब्धता की जानकारी से बागवानी कृषि के व्यवसाय को गति मिलती है और संशोधित उत्पादों से अधिक लाभ कमाया जा सकता है। उद्योग के रूप में बागवानी कृषि की मांग बढ़ती जा रही है क्योंकि बाजार में बागवानी कृषि की मांग बढ़ रही है। इससे बागवानी कृषि करने वाले लोगों में नये–नये उपकरणों का इस्तेमाल करने के प्रति जागरूकता बढ़ी है, खासकर ऐसे उपकरण एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से ले जाया जा सकता है और सरलतापूर्वक इस्तेमाल किये जा सकते हैं। ऐसे प्रौद्योगिक विकास में अनेक नये–नये उपकरण शामिल हैं जैसे – उद्यान की घास काटने की मशीन, मक्का, गेहूँ, धान तथा गन्ना काटने की मशीनें तथा अन्य कृषि उपयोगी यंत्रों का इस्तेमाल/सजावटी बागवानी कृषि के लिए इस्तेमाल होने वाले कुछ नये उपकरण भी चलन में आये हैं जिन्हें हाथ से भी चलाया जा सकता है और बिजली से भी।

**बोध प्रश्न 2**

1) बागवानी कृषि तथा बागवानी कृषिकारों की अपने शब्दों में व्याख्या कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

2) भारत में बागवानी कृषि की स्थापना किसने की थी?

.....

.....

.....

.....

3) भारत में लोकप्रिय बागवानी कृषि के तीन रूप कौन–कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

4) परम्परागत बागवानी कृषि में आधुनिक प्रौद्योगिक माध्यमों का इस्तेमाल होता है। सही उत्तर का चुनाव कीजिए। सही (✓) / गलत (×)

## 7.9 सारांश

पशुपालक और बागवानी कृषि कार्य में लगे लोग भारत की अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग हैं। पशुपालन में जानवरों को पाला जाता है। बागवानी कृषि में विभिन्न प्रकार के पौधें उगाये जाते हैं। इस इकाई को दो भागों में विभाजित किया गया है। पहले भाग में पशुपालन तथा पशुपालन व्यवसाय का वर्णन किया गया है। इसमें भारत में पशुपालक समुदायों का वर्णन किया गया है। इसमें भारत के दो प्रमुख पशुचारण क्षेत्रों के बारे में बताया गया है। एक हिमालय क्षेत्र में हैं, दूसरा भारत के पश्चिमी भाग में। विभिन्न संस्थानों के माध्यम से सकरारी हस्तक्षेप के कारण पशुपालकों को पशुओं के रखरखाव तथा ग्रीष्म और शरद ऋतुओं में पशुचारण के मामले में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इस इकाई में भारत के दोनों पशुचारण क्षेत्रों से संबंधित समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।

इस इकाई के दूसरे भाग में बागवानी कृषि के बारे में बताया गया है। भारत तथा विश्व की खाद्यान्न प्रणाली में बागवानी कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है। इस इकाई में भारत के बागवानी कृषि से जुड़े समाजों का संक्षेप से वर्णन किया गया है। बागवानी कृषि के उत्पादों के इस्तेमाल के आधार पर बागवानी कृषि को तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है। इस इकाई में कृषि प्रौद्योगिकी के विभिन्न रूपों तथा उपकरणों के आधार पर बागवानी कृषि को दो भागों में विभाजित किया गया है।

## 7.10 संदर्भ

वी. भसीन (1988). *हिमालयन इकॉलॉजी : ट्रॉशूमेन्स एण्ड सोशल ऑर्गनाइजेशन ऑफ गद्दीज इन हिमाचल प्रदेश,* नई दिल्लीः कमल राज।

एल. वी. ब्राउन (2002). *एप्लाई प्रिसिपल्स ऑफ हॉर्टीकल्चर* (सैकिण्ड एडीशन) बटर वर्थ – हीन मान।

के. एम चक्रवर्ती (1998). *ट्रॉशूमेन्स एण्ड कस्टमरी पैस्टोरल राइट्स इन हिमाचल प्रदेशः क्लेनिंग द हाइ पॉरचर्स माउन्टेन रिसर्च एण्ड डिवैलपमेन्ट,* 18 (1, 5–15)।

एस.पी. घोष (1999). *रिसर्च प्रीपेयर्ड नैस फॉर एस. सीलेरेटेड ग्रोथ ऑफ हॉर्टिकल्चर इन इण्डिया। जरनल ऑफ एप्लाइड हॉर्टीकल्चर,* 1 (1), 64–69।

जे. जैनिक (2003). *हिस्ट्री ऑफ हार्टीकल्चर* – टिपर केनो प्रेस।

पी.एस. कबूरी (1999). *पैस्टोरेलिज्म इन एक्सपैन्शन : द ट्रांशमिंग हर्डर्स ऑफ वैस्टर्न राजस्थान,* नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

बी. के. सबरवाल (1999). *पैस्टोरल पॉलिटिक्स : शैफर्ड्स, ब्यूरोक्रेट्स एण्ड कन्जर्वेशन इन द वेस्टर्न हिमालय,* नई दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी।

## 7.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1) पशुपालन वह प्रणाली है जिसमें बड़े स्तर पर पशुओं का पालन किया जाता है।
2) पश्चिमी भारत और भारतीय हिमालय क्षेत्र की बंजर भूमियां।
3) घूमंतू पशुपालक वे प्रवासी समुदाय है जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हुए पशु चराते है और अस्थायी रूप से उन्हीं स्थलों पर निवास करते हैं। उनका अस्थायी निवास पारिस्थितिकी के आधार पर तय किया जाता है, जैसे – स्थल पर पशुचराने के लिए हरी–घास की पर्याप्त उपलब्धता।
4) गलत

**बोध प्रश्न 2**

1) बागवानी कृषि में ऐसे पौधे उगाये जाते हैं जो खाने के काम आते हैं, और सजावट, दवाओं आदि के रूप में इस्तेमाल होते हैं। बागवानी कृषि का काम करने वालों को बागवानी कृषि कर्मी या बागवान कहा जाता है।
2) भारत में बागवानी या बागवानी कृषि की स्थापना विलियम केरी ने की थी।
3) i) मेवे की खेती
   ii) सब्जियां उगाना
   iii) सजावटी उत्पादों की खेती
4) गलत